शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैंकों द्वारा दिए गए शिक्षा ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन

डॉ.निलेश डागर (शोधार्थी)
डॉ.पी.के.सनसे (प्राध्यापक)
भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू
माया बकोरिया (शोधार्थी)
वाणिज्य अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शिक्षा पर देश का भविष्य निर्भर होता होता है। शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। वर्तमान में आर्थिक रूप से सभी के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया है। शिक्षण शुल्क में वृद्धि होने के कारण अनेक मेधावी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए बैंक द्वारा प्रदत्त वित्तीय सुविधा का लाभ ले रहे हैं। बैंकों ने यह सुविधा ऋण के रूप में प्रदान की है परन्तु बैंक इस ऋण को विद्यार्थियों से वसूल करने में असमर्थ हो रही है। इससे विद्यार्थियों को दिया गया ऋण गैर-निष्पादित संपत्तियों में रूपांतरित हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैंकों द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैरनिष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति मध्यप्रदेश की वेबसाईट से प्राप्त द्वितीयक समंकों पर आधारित है। इस शोध पत्र में मध्यप्रदेष में कार्यरत 21 सार्वजनिक बैंकों, 6 एसबीआई ग्रुप की बैंकों के 5 वर्षों (2011-12 से 2015-16) की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का अध्ययन प्रवृत्ति विश्लेषण, अनुपात विश्लेषण एवं विचरण गुणक विश्लेषण के माध्यम से किया गया है।

मुख्य बिंदु: *सार्वजनिक बैंक, शिक्षा ऋण, गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ*

प्रस्तावना

बैंकिंग प्रणाली किसी भी विकासशील देश की अर्थव्यवस्था के विकास का केंद्र बिन्दु होती है। बैंकों के द्वारा वित्तीय मध्यस्थता एवं भुगतान प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जाती है। इसीलिए देश की अर्थव्यवस्था में बैंकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। बैंकिंग संस्थाओं ने अपने शाखाओं और जमा एवं अग्रिम जैसे कार्यों के द्वारा मुद्रा बाजार में अपनी विशेष जगह बना ली है। बैंकों का प्रमुख कार्य उधार देना एवं जमा स्वीकार करना होता है। बैंकों के द्वारा उधार दी गयी राशि एवं उसका ब्याज यदि समय पर प्राप्त नहीं होता है तो वह गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ कहलाती है।

शोध साहित्य की समीक्षा

रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया द्वारा गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है :

कोई भी सम्पत्ति गैर-निष्पादित सम्पत्ति तब मानी जाती है, जब वह बैंक के लिए आय उत्पन्न करना बंद कर देती है। गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ वह ऋण है जिसकी ब्याज या मूलधन की किस्त किसी विशिष्ट अवधि के लिए 'गत देय' हो गई हो।

कोई भी सम्पत्ति गैर-निष्पादित सम्पत्ति तब मानी जाएगी जब :

किसी मियादी ऋण के सम्बन्ध में ब्याज या मूलधन की किस्त 90 से अधिक दिनों के लिए 'अति देय' हो गई हो।

ओवर ड्राफ्ट/नकदी ऋण (ओडी/सीसी) के संबंध में खाता 90 से अधिक दिनों के लिए 'आउट ऑफ़ आर्डर' रहा हो।

खरीदे एवं भुनाए गए बिलों के मामले में बिल 90 से अधिक दिनों के लिए 'अति देय' रहा हो।

'अल्पकालीन फसलों' के लिए दिया गया ऋण तब गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ माना जाएगा जब मूलधन की क़िस्त या उस पर ब्याज दो 'फसली मौसम' के लिए 'अति देय' हो गयी हो।

'दीर्घकालिन फसलों' के लिए दिया गया ऋण तब गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ माना जाएगा जब मूलधन की क़िस्त या उस पर ब्याज एक फसली मौसमके लिए 'अति देय' हो गयी हो।

सम्पत्तियों का वर्गीकरण

रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया के द्वारा गैर-निष्पादित सम्पत्तियों को तीन भागों में विभक्त गया है :

अवमानक सम्पत्ति

31 मार्च 2005 से किसी सम्पत्ति को तब अवमानक सम्पत्ति माना जाएगा यदि वह 12 महीने या उससे कम समय के लिए अनर्जक सम्पत्ति के रूप में रही हो। ऐसी सम्पत्ति में ऋण कमजोरी निहित होती है जो ऋण की वसूली को खतरे में डाल देती है और यदि ऋण में निहित कमजोरी को सही समय पर ठीक नहीं किया जाय तो बैंकों को घाटा उठाना पड़ सकता है।

संदिग्ध सम्पत्ति

31 मार्च 2005 से किसी सम्पत्ति को संदिग्ध के रूप में तभी वर्गीकृत किया जाता है जब वह 12 माह तक अनर्जक सम्पत्ति रही हो। संदिग्ध सम्पत्तियों में वे सभी कमजोरी निहित होती है जो अवमानक सम्पत्ति में होती है। संदिग्ध सम्पत्ति की विशिष्ट बात यह होती है कि इस प्रकार की सम्पत्ति के बारे में ज्ञात तथ्य तथा शर्तें इतने कम होते हैं कि ये सम्पूर्ण वसूली को संदेहात्मक बना देते हैं।

हानि सम्पत्तियाँ

हानि सम्पत्ति वह है जहाँ हानि बैंक द्वारा, आंतरिक या बाहरी लेखा परीक्षकों द्वारा, सहकारिता विभाग द्वारा या रिर्जव बैंक के द्वारा पहचान ली गई हो परंतु हानि की पूरी राशि को अपलिखित नहीं किया गया हो। अन्य शब्दों में हानि सम्पत्ति वह है जिसकी वसूली नहीं की जा सकती हो और अगर वसूली की भी जाती है तो इतनी कम राशि प्राप्त होती है कि उसके बैंक योग्य सम्पत्ति के रूप में रखने का कोई औचित्य न हो भले उसका वसूली मूल्य या निस्तारक मूल्य हो।

गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में दिन-प्रतिदिन हो रही वृद्धि बैंकों की एक ज्वलंत समस्या है। बहुत सारे शोधार्थियों, शिक्षण संस्थाओं एवं लेखकों के माध्यम से गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के कारणों, गैर-

निष्पादित सम्पत्तियों के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं एवं गैर-निष्पादित सम्पत्तियों को बैंकिंग पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। बैकिंग क्षेत्र में अभी तक किए शोध कार्य निम्न हैं :

क्र.	वर्ष	लेखक	विषय
1	2014	निलेश डागर	भारतीय स्टेट बैंक के वित्तीय विवरणों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन- गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के विशेष सन्दर्भ में
2	2012	भारती शाह	म.प्र. में सार्वजनिक बैंकों द्वारा प्रदत्त शिक्षा ऋण की प्रभावशीलता का अध्ययन"
3	2003	डॉ.पी.के.सनसे	स्टेट बैंक समूह के बैंकों का आर्थिक तुलनात्मक अध्ययन
4	2003	वरूण शिंदे	स्टेट बैंक ऑफ़ इन्दौर का वित्तीय विश्लेषण
5	2001	प्रीति पालीवाल	बैंक ऑफ़ इण्डिया की कृषि वित्त में भूमिका (सेंधवा शाखा के संदभ में)
6	2001	ललिता वर्मा	खरगोन जिले में कृषि विकास में बैंकों का योगदान
7	1998	चन्द्रशेखर मरोठ	सेंधवा तहसील में ग्रामीण ऋणग्रस्तता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
8	1998	ऋतुषा हार्डिया	स्टेट बैंक ऑफ़ इन्दौर का लघु उद्योग के विकास में योगदान (इन्दौर के विशेष संदर्भ में)

उपर्युक्त शोध पत्रों में भारतीय स्टेट बैंक के वित्तीय विवरणों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के विशेष सन्दर्भ, स्टेट बैंक ऑफ़ इन्दौर का लघु उद्योग के विकास में योगदान (इन्दौर के विशेष संदर्भ में), म.प्र. में सार्वजनिक बैंकों द्वारा प्रदत्त शिक्षा ऋण की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है, परंतु इस शोध-पत्र में मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैंकों के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन किया गया है एवं मध्यप्रदेश की सार्वजनिक बैकों को गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के सम्बन्ध में सुझाव दिए गए हैं।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना यह है कि सार्वजनिक क्षेत्र के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में लगातार वृद्धि होती जा रही है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण का अध्ययन करना।

मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना का परीक्षण करना।

प्रस्तुत शोध में ज्ञात समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध-पत्र में मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैंकों के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का ही अध्ययन किया गया है तथा यह अध्ययन सिर्फ वर्ष 2011-12 से 2015-16 तक के शिक्षा ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का ही अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र की प्रविधि संगणना प्रविधि है। हमारा यह शोध-पत्र पूर्णतया द्वितीयक समंकों पर आधारित है। इन समंकों को राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति, रिर्जव बैंक ऑफ़ इण्डिया की साईट, पत्रिकाओं एवं बैंकिंग विषय पर पूर्व में किए गए शोध पत्रों से लिया गया है। यह शोध कार्य मध्यप्रदेश में कार्यरत सार्वजनिक बैंकों के 5 वर्षों 2011-12 से 2015-16 के राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति मध्यप्रदेश से प्राप्त समंकों पर निरपेक्ष विश्लेषण में प्रवृत्ति विश्लेषण, सापेक्ष विश्लेषण में अनुपात विश्लेषण एवं सांख्यिकी विश्लेषण में विचरण गुणक के आधार पर किया गया है।

विश्लेषण

निरपेक्ष विश्लेषण

निरपेक्ष विश्लेषण के अंतर्गत प्रवृत्ति विश्लेषण द्वारा कृषि ऋण एवं कृषि ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के घटने एवं बढ़ने की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

क्र.	वर्ष	शिक्षा ऋण	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि		गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ	प्रवृत्ति	पिछले वर्ष की तुलना में कमी या वृद्धि	
				राशि	प्रतिशत			राशि	प्रतिशत
1	2011-12	22160	100	0	0	7789	100	0	0
2	2012-13	26394	119.11	4234	19.11	6724	86.33	-1065	-13.67
3	2013-14	29831	134.62	3437	13.02	7943	101.98	1219	18.13
4	2014-15	19457	87.80	-10374	-34.78	5213.63	66.94	-2729.37	-34.36
5	2015-16	48031	216.75	28574	146.86	8431.87	108.25	3218.24	61.73

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त सार्वजनिक बैंकों के द्वारा वर्ष 2015-2016 में सबसे अधिक शिक्षा ऋण दिया गया है, जिसकी प्रवृत्ति 216.75है और सभी सार्वजनिक बैंकों की कुल गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ भी वर्ष 2015-2016 में ही सबसे अधिक है, जिसकी प्रवृत्ति 108.25 है।

सापेक्ष विश्लेषण

सापेक्ष विश्लेषण में प्रति 100 रुपये के ऋण पर गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का प्रतिशत निकाला गया है :

$$\frac{\text{गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ}}{\text{ऋण}} \times 100$$

क्र.	बैंकों के नाम	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	कुल अनुपात	औसत अनुपात
1	इलाहाबाद बैंक	78.07	31.71	52.33	63.64	29.57	255.32	51.06
2	आंध्रा बैंक	125.00	55.56	17.91	13.21	5.44	217.12	43.42

3	बैंक ऑफ़ बड़ौदा	13.51	10.49	24.63	36.73	67.91	153.27	30.65
4	बैंक ऑफ़ इण्डिया	22.23	44.79	7.68	58.30	39.35	172.34	34.47
5	बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र	0.00	24.63	45.17	58.03	47.44	175.28	35.06
6	केनरा बैंक	7.41	12.42	23.91	16.40	9.82	69.96	13.99
7	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया	6.59	8.09	17.98	56.31	57.00	145.96	29.19
8	कारपोरेशन बैंक	14.36	36.46	26.44	167.14	24.40	268.81	53.76
9	देना बैंक	20.05	40.94	55.70	50.70	117.14	284.53	56.91
10	आईडीबीआई बैंक	3.96	5.56	2.12	1.83	0.58	14.04	2.81
11	इंडियन बैंक	68.18	0.00	0.00	0.00	0.00	68.18	13.64
12	इंडियन ओवरसीज बैंक	52.21	4.38	10.05	0.00	3.03	69.67	13.93
13	ओरिएंटल बैंक ऑफ़ कॉमर्स	190.16	195.69	238.16	0.00	30.97	654.98	131.00
14	पंजाब एण्ड सिंध बैंक	20.69	0.00	72.97	0.00	44.81	138.47	27.69
15	पंजाब नेशनल बैंक	5.85	22.55	31.75	26.15	8.45	94.75	18.95
16	सिंडिकेट बैंक	21.76	34.42	53.95	36.00	44.00	190.13	38.03
17	यूको बैंक	0.00	0.00	0.00	4.73	52.58	57.32	11.46
18	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया	36.67	40.26	46.67	76.77	20.59	220.97	44.19
19	यूनइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया	8.70	0.00	0.00	34.38	0.00	43.07	8.61
20	विजया बैंक	0.00	9.62	6.94	0.00	1.65	18.21	3.64
21	भारतीय महिला बैंक	_	_	_	0.00	0.00	0.00	0.00
	कुल वाणिज्यिक बैंक	18.22	23.19	24.76	41.53	25.58	133.29	26.66
22	स्टेट बैंक ऑफ़ हैदराबाद	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

23	स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
24	स्टेट बैंक ऑफ़ पटियाला	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
25	स्टेट बैंक ऑफ़ ट्रावनकोर	10.00	2.78	10.00	0.00	0.00	22.78	4.56
26	स्टेट बैंक ऑफ़ जयपुर	53.33	73.33	73.33	0.00	0.00	200.00	40.00
27	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया	132.18	30.14	32.32	0.00	2.35	196.99	39.40
		131.23	29.90	32.14	0.23	2.35	195.85	39.17
		35.15	25.48	26.63	26.80	17.56	131.60	26.32

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक बैंकों में वर्ष 2011-2012 में प्रति 100 रुपये के शिक्षा ऋण पर अन्य वर्षों की तुलना में 35.15 रुपये सबसे अधिक गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ है तथा वर्ष 2015-2016 में प्रति 100 रुपये के शिक्षा ऋण 17.56 रुपये सबसे कम गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ है।

परंतु यदि सार्वजनिक बैंकों के तुलनात्मक वर्ष 2011-12 से 2015-16 के पाँच वर्षों के कुल प्रति 100 रुपये के शिक्षा ऋणों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों को देखा जाए तो उसमें 2011-12 से 2015-2016 तक लगातार गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में कमी आ रही है।

सांख्यिकी विश्लेषण

सांख्यिकी विश्लेषण के अंतर्गत समंकों में परिवर्तनशीलता कितनी है, यह ज्ञात करने के लिए विचरण गुणक का प्रयोग किया गया है, सार्वजनिक बैंकों के कृषि ऋण एवं गैस-निष्पादित सम्पत्तियों का विश्लेषण

वर्ष	शिक्षा ऋण (x)	(x-Mean) (x-29175) Dx	Dx^2	गैर निष्पादित संपत्तियां (x)	(x-Mean) (x-7220) Dx	Dx^2
2011-12	22160	-7015	49210225	7789	569	323761
2012-13	26394	-2781	7733961	6724	-496	246016
2013-14	29831	656	430336	7943	723	522729
2014-15	19457	-9718	94439524	5213.63	-2006	4025520.577
2015-16	48031	18856	355548736	8431.87	1212	1468628.897
कुल			507362782			6586655
Standard Deviation	$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{507362782/5}$ $SD - \sqrt{101472556.4}$			$SD = \sqrt{Edx2/n}$ $SD = \sqrt{6586655/5}$ $SD - \sqrt{1317331.095}$		

	SD = 10073.35874	SD = 1147.75045
Co-Efficient of Variation	$CV = \frac{SD}{Mean} \times 100$ $CV = \frac{10073.35874}{29175} \times 100$ CV = 34.53	$CV = \frac{SD}{Mean} \times 100$ $CV = \frac{1147.75345}{7220} \times 100$ CV = 15.90

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक बैंकों के शिक्षा ऋण को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन 34.53 है तथा सार्वजनिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियों का को-एफिसिएंट ऑफ़ वेरिएशन15.90 है। अतःसार्वजनिक बैंकों की गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ में शिक्षा ऋण की तुलना में परिवर्तनशीलता कम है।

सुझाव

हमारे इस शोध पत्र से ज्ञात हो चुका है कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैकों के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में लगातार कमी हो रही है। अतःसार्वजनिक क्षेत्र के बैकों के लिए बहुत ही अच्छे संकेत है, परंतु बैंकों को अपनी गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में और कमी लाने के प्रयास करना चाहिए। अतः हमारे द्वारा मध्यप्रदेश की सार्वजनिक बैकों को दिए गए सुझाव निम्न हैं -

सार्वजनिक बैंकों को ऋण वसूली नीति बनाना चाहिए तथा गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में कमी लाने का प्रयास करना चाहिए।

सार्वजनिक बैंकों को वसूली प्रकोष्ठ की स्थापना करना चाहिए तथा प्रकोष्ठ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ऋण एवं ब्याज की वसूली में तीव्रता लानी चाहिए।

सार्वजनिक बैंकों को शिक्षा ऋण प्रदान करते समय विद्यार्थियों का चरित्र, क्षमता एवं पूँजी से सम्बंधित सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिए।

सार्वजनिक बैंकों के द्वारा शिक्षा ऋण देते समय विद्यार्थियों की ऋण वापसी की योग्यता का उचित मूल्यांकन विशेषज्ञों के माध्यम से करवाना चाहिए एवं शिक्षा ऋण की उचित मात्रा ही स्वीकृत की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

गैर-निष्पादित सम्पत्तियाँ बैकिंग क्षेत्र के लिए चिंतन का विषय है। गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में बैंकों के द्वारा दिए गए ऋण का मूलधन एवं उसका ब्याज को शामिल किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों के प्रकार, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में कमी या वृद्धि ज्ञात करना एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में वृद्धि हो रही है तो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को आवश्यक सुझाव दिए गए हैं।

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि मध्यप्रदेश में सार्वजनिक बैंकों के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में कमी हो रही है या वृद्धि तथा हमारे इस शोध पत्र से ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश में सार्वजन्कि बैंकों के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में

लगातार कमी हो रही है। अतः अंत में हमारे शोध पत्र की परिकल्पना सार्वजनिक क्षेत्र के द्वारा दिए गए शिक्षा ऋण में गैर-निष्पादित सम्पत्तियों में लगातार वृद्धि हो रही है गलत सिद्ध हो गयी है।

सन्दर्भ ग्रंथ

मॉडर्न बैंकिंग इन इंडिया, ओ.पी.अग्रवाल, हिमालय पब्लिशिंग हाउस

रिसर्च ऑन एनपीए मैनेजमेंट, वंदना जोशी, एलएपी लम्बर्ट एकेडमिक पब्लिशिंग

रिसर्च मेथोडोलोजी, वेयने गोडडास, जुटा ऐकेडमिक पब्लिकेशन

इंडियन बैंकिंग एसोसिएशन मैगज़ीन

ग्लोबल फाइनेंस मैगज़ीन

दि बैंकर मैगज़ीन

www.iba.org.in
www.slbcmadhyapradesh.in
http://www.magzter.com>business
http://www.slideshare.net